बाइबल टीचर

वर्ष 18 सितम्बर 2021 अंक 10

सम्पादकीय

सुनते और पढ़ते तो हैं परन्तु विश्वास नहीं करते

आज सारे संसार में और हमारे आस-पास सुसमाचार लोगों को सुनाया जा रहा है। मसीही साहित्य द्वारा टीवी. के द्वारा तथा अन्य साधनों द्वारा हमारा प्रयत्न है कि लोग सत्य सुसमाचार के विषय में जाने परन्तु अधिकतर लोग इस पर विश्वास नहीं करते। यीशु को भी हज़ारों लोग सुनते थे परन्तु कुछ लोग उसकी बातें सुनकर नजरअंदाज कर देते थे। यीशु ने कहा था, तुम सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा (यूहन्ना 8:32)। यीशु ने लोगों से कहा था कि तुम मेरे वचन को मन में स्थिर नहीं रखते (यूहन्ना 5:38)। लोग सुनते तो हैं परन्तु बाद में भूल जाते हैं। कई बार परमेश्वर के वचन को लोग इतना महत्व नहीं देते। हां, दुनिया की बातें जैसे टी.वी. और मनोरंजन की बातों में हमारा ध्यान अधिक रहता है। बाइबल हमारे लिये एक दीपक के समान है (भजन 119:105)। यदि आप अपने जीवन में सही मार्ग पर आना चाहते हैं तो परमेश्वर के वचन को पढ़िये और उस पर चलने का प्रयास कीजिये।

कई लोग वचन को पढ़ते हैं तो लेकिन उनकी नियत सही नहीं होती क्योंकि वे साफ मन से उसका अध्ययन नहीं करते। यहूदी लोग वचन को पढ़ते थे लेकिन अच्छे मन से नहीं। उन्हें यह पता था कि यीशु के शब्दों में अनन्त जीवन है, परन्तु फिर भी उनके मन में यीशु के प्रति अविश्वास था। यहूदियों से यीशु ने कहा था कि तुम पवित्रशास्त्र में ढूंढ़ते हो क्योंकि समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है, फिर भी तुम जीवन पाने के लिये मेरे पास आना नहीं चाहते। (यूहन्ना 5:39-40) कितने दुख की बात है कि यह लोग सब जानते हुए भी यीशु में विश्वास नहीं करना चाहते थे। वे यह जानते थे कि यीशु उद्धार करने वाला मुक्तिदता है, परन्तु फिर उसमें विश्वास नहीं करते थे।

कई लोग यीशु के पास आना तो चाहते हैं, परन्तु आते-आते रूक जाते हैं, ऐसा भी देखा जाता है, कि कई लोग केवल मुंह से कहते हैं कि यीशु मेरे मन में आजा परन्तु उसकी आज्ञा नहीं मानना चाहते। यीशु ने कहा था कि लोग उसमें विश्वास लाकर बपतिस्मा ले, परन्तु बपतिस्मा वाली आज्ञा वे मानना नहीं चाहते। यीशु ने कहा था फिर भी जीवन पाने के लिये तुम मेरे पास आना नहीं चाहते। (यूहन्ना 5:40)। यीशु ने एक विशेष बात कही थी कि मैं भले चंगों के लिये बल्कि उनके लिये आया हूं जो आत्मिक रूप से बीमार हैं और उसने निमंत्रण देकर कहा था, ''हे सब परिश्रम करने वाले और बोझा से दबे लोगों मेरे पास आओ मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।'' (मत्ती 11:28)। जबकि उसने साफ शब्दों में कहा है- कि लोग उसके पास बिना किसी झिझक के आकर उसमें विश्वास कर सकते हैं, अपने पापों से मन फिरा सकते हैं तथा उसका अंगीकार करके कि वह परमेश्वर का पुत्र है, अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेकर उसके अनुयायी बन सकते हैं, परन्तु फिर भी रास्ते में उन्हें कोई रूकावट रोक देती है। आज बहुत से प्रचारक यह सिखाते है कि यीशु से प्रार्थना करो कि, हमारे मन में आ जा और उसी समय आपका उद्धार हो जायेगा, जबकि बाइबल हमें ऐसा कहीं भी नहीं सिखाती। प्रेरित पौलुस ने हमें बताया कि सुसमाचार में उद्धार देने की सामर्थ है। (रोमियों 1:16)। जब कोई व्यक्ति सुसमाचार को सुनता है तो उसमें विश्वास उत्पन्न होता है और उसी विश्वास से वह बपतिस्मा के लिये तैयार हो जाता है।

कई बार लोग परमेश्वर से अधिक संसार की बातों को अधिक महत्व देते है और इसलिये आज्ञा मानने से रूक जाते हैं। (यूहन्ना 5:42)। परमेश्वर के पास आने के लिये उसकी बातों को अधिक महत्व देना चाहिए (याकूब 1:17)। हमें अपने पूरे मन से उसके पास आना चाहिए (मत्ती 22:37)। परमेश्वर ने अपना प्रेम हमारे प्रति इस तरह से दिखाया कि, जब हम पापी थे तभी उसने अपने प्रिय पुत्र यीशु को हमारे पापों के लिये बलिदान कर दिया। (रोमियों 5:8)। यीशु ने एक बार लोगों से कहा था, ''तुम जो एक दूसरे से आदर चाहते हो और वह आदर जो अद्भुत परमेश्वर की ओर से है नहीं, चाहते किस प्रकार से विश्वास कर सकते हो? (यूहन्ना 5:44) हमें यह प्रयत्न करना चाहिए कि परमेश्वर की बात पहिले मानकर उसको आदर दे।

आज यदि आपने परमेश्वर के वचन को जाना है तथा यीशु के सुसमाचार को सुना है तो आप सच्चे मन से विश्वास कीजिये तथा जल रूपी कब्र में बपतिस्मा लेकर अपने पापों को धो डालिये। (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; 22:16, गलतियों 3:26-27)। एक सच्चा विश्वासी वह है जो वचन को सुनकर उसे मानता है तथा प्रभु के लिये फल लाता है। (लूका 8:15) प्रभु के लिये फल लाना एक बहुत बड़ी आशिष की बात है। (गलतियों 5:22, 23)।

बाइबल में परमेश्वर ने क्या दर्शाया है?

सनी डेविड

मैंने अक्सर इस बात को कहा है, कि बाइबल किसी एक विशेष धर्म की पुस्तक नहीं है। पर बाइबल वास्तव में परमेश्वर के वचन की पुस्तक है। किन्तु इसका अर्थ क्या है? इसका मतलब यह है, कि बाइबल पृथ्वी पर सब लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा का प्रकाशन है। हम सबका, सब जातियों का, सब देशों के भांति-भांति के सब लोगों का केवल एक ही परमेश्वर है। यह बात और है, कि अनेकों लोग परमेश्वर की इच्छा को न जानकर, उसकी उपासना और आराधना अपनी-अपनी विधियों से, और कल्पनाओं से और सदियों से ठहराए हुए मनुष्यों के रीति-रिवाजों से कर रहे हैं। पर इसका अर्थ यह कदापि नहीं है, कि परमेश्वर अपनी इच्छा के विरूद्ध कुछ भी स्वीकार कर लेगा। क्योंकि यदि ऐसा वास्तव में होता, तो फिर वह बाइबल में अपनी इच्छा को लिखवाकर क्यों हमें देता? प्रभु यीशु ने एक बार कुछ इस प्रकार कहा था: कि जो, हे प्रभु, हे प्रभु करते हैं परमेश्वर उन सबकी नहीं सुनता, पर वह केवल उन्हीं की सुनता है, जो उसकी इच्छा पर चलते हैं। और इसी बात को और सही ढंग से समझाने के लिये प्रभु यीशु ने एक कहानी कहकर इस प्रकार समझाया था:

कि एक बार दो व्यक्तियों ने अपने-अपने लिये दो अलग-अलग घर बनाए थे। उनमें से एक ने अपने घर की बुनियाद चट्टान के ऊपर रखी थी, और उसे अच्छी मजबूती के साथ बनाया था। पर दूसरे व्यक्ति ने अपने घर की नींव बालू रेत पर रखी थी, और इसलिये उसका घर मजबूत नहीं था। सो जब आंधी-तूफान आए तो उससे उस बुद्धिमान व्यक्ति के घर को तो कोई नुकसान नहीं हुआ, जिसने भविष्य को ध्यान में रखकर अपने घर की बुनियाद चट्टान पर रखी थी। पर उस दूसरे व्यक्ति का घर, जिसने मूर्खतापूर्ण अपने घर की बुनियाद बालू रेत पर रखी थी, गिरकर खत्म हो गया। और फिर, प्रभु ने कहा था, ऐसे ही हर एक वो इंसान है, जो मेरी बातों को सुनकर उन्हें मानता है, वह उस बुद्धिमान मनुष्य के समान है जिसने अपना घर चट्टान पर बनाया था। पर जो इंसान मेरी बातों को सुनकर उन्हें नहीं मानता, वह उस व्यक्ति के समान है जिसने बालू रेत पर अपना घर बनाया था। (मत्ती 7:21-27)।

मित्रो, परमेश्वर ने मनुष्य को केवल बनाया ही नहीं है। पर उसने मनुष्य को एक विशेष उद्देश्य से बनाया है। और इसीलिए उसने मनुष्य को बनाकर ऐसे ही नहीं छोड़ दिया, कि वह अपनी मन-मानी से चले और अपने जीवन को बर्वाद कर ले। पर मनुष्य को उसने अपनी इच्छा भी बताई है। उसने मनुष्य पर प्रकट किया है, कि वह कौन है और वह कहां से इस पृथ्वी पर आया है। उसने मनुष्य को बताया है, कि पृथ्वी पर उसके जीवन का क्या उद्देश्य है। उसने मनुष्य को बताया है, कि आरंभ में परमेश्वर ने उसे कैसे बनाया था; और आज मनुष्य ने अपने आपको क्या बना

लिया है। उसने इंसान को बताया है, कि यदि वह उसकी इच्छा को मानकर उस पर चलेगा तो वह फिर से परमेश्वर के योग्य बन जाएगा। पर यदि परमेश्वर की इच्छा को न मानकर मनुष्य उस पर नहीं चलेगा, तो अन्त में उसका आत्मिक घर भी उस मूर्ख व्यक्ति की ही तरह गिरकर नाश हो जाएगा।

एक बुद्धिमान व्यक्ति वह है, जो चेतावनी को सुनकर उस पर ध्यान करता है, और समय रहते बचाव का उचित उपाय करता है। पर मूर्ख व्यक्ति ऐसा नहीं करता। वह मूर्खता के हरे-भरे काल्पनिक संसार में रहता है। और चेतावनी की बातों को हंसी-मजाक में उड़ा देता है। क्याआज ऐसे ही बहुतेरे लोग जमीन पर नहीं है? उन्हें केवल अपने नाशमान शरीरों की ही चिंता है। यदि वे परमेश्वर का नाम भी लेते हैं या उसके पास आना भी चाहते हैं तो केवल अपने शारीरिक दुखों से छुटकारा पाने के ही लिये। तोभी, प्रभु यीशु ने ऐसे ही लाखों लोगों को शिक्षा देकर एक जगह कहा था, कि नाशमान वस्तुओं को पाने के लिये परिश्रम न करो। पर अनन्त और आत्मिक वस्तुओं को प्राप्त करने का परिश्रम करो, जिसे देने के लिये मैं स्वर्ग से पृथ्वी पर आया हूं। (यूहन्ना 6:27)।

परमेश्वर ने अपना वचन हमें शारीरिक जीवन प्राप्त करने के लिये नहीं दिया है। पर उसने हमें अपना वचन आत्मिक जीवन पाने के लिये दिया है। उसने अपनी इच्छा को हमारे शारीरिक जीवनों को बचाने के लिये प्रकट नहीं किया है। पर उसने अपनी इच्छा को हमारी आत्माओं को बचाने के लिए प्रकट किया है। उसे हमारे शरीरों की नहीं, परन्तु हमारी आत्माओं की चिंता है। वह जानता है, कि हम अपने शरीरों को बचाना चाहकर भी नहीं बचा सकते क्योंकि हम सब एक दिन अवश्य ही मरेंगे। और यह भी उसी ने सब मनुष्यों के लिये नियुक्त किया है। तोभी हमारे शरीरों की तंदरूस्ती के लिये उसने हमें तरह-तरह की खाने-पीने की चीजें दी हैं। और दवाईयां दी हैं। उसने हमें ताकत दी है, और दिमाग दिया है कि इन शारीरिक वस्तुओं को हम अपने लिये उपार्जित कर सकते हैं। पर जो हम स्वयं अपने लिये नहीं कर सकते, वह है अपनी आत्मा का उद्धार। पाप से अपनी मुक्ति। नरक में पाप के कारण जाने से अपनी आत्मा को बचाना। यह हम नहीं कर सकते।

इसीलिये परमेश्वर ने अपनी इच्छा को बाइबल में लिखवाकर मनुष्य को दिया है। बाइबल में परमेश्वर ने पाप के गंभीर परिणाम को दर्शाया है। बाइबल में परमेश्वर ने मनुष्य के लिये अपने प्रेम को प्रकट किया है। बाइबल में परमेश्वर ने उस बलिदान को प्रकट किया है। जिसे उसने मानवता से प्रेम रखकर सारे जगत के पापों का प्रायश्चित करने को दिया है। और बाइबल में परमेश्वर ने सब मनुष्यों को बताया है कि किस प्रकार उसकी इच्छा को मानकर पृथ्वी पर हर एक जन अपने-अपने पापों से छुटकारा प्राप्त करके, उसके स्वर्ग में प्रवेश करने के योगय बन सकता है।

बाइबल हमें यह सिखाती है कि, उसका पुत्र, यीशु मसीह, पृथ्वी पर हमारे जीवनों का आदर्श होना चाहिए। अर्थात जैसा जीवन उसने पृथ्वी पर बिताया था, वैसा ही जीवन हमारा भी होना चाहिए। हमें उसके समान बनने का प्रयत्न करना चाहिए। यह परमेश्वर की इच्छा है। "और तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो", एक जगह बाइबल में लिखा है, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे लिये दुख उठाकर, तुम्हें एक आदर्श

दे गया है, कि तुम भी उसके चिन्ह पर चलो। न तो उसने पाप किया, और न उसके मुंह से छल की कोई बात निकली। वह गाली सुनकर गाली नहीं देता था, और दुख उठाकर किसी को भी धमकी नहीं देता था, पर अपने आप को सच्चे न्यायी के हाथ में सौंपता था। वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताए। (1 पतरस 2:21-24)।

यदि आप प्रभु यीशु मसीह में सारे मन से विश्वास लाकर और अपना मन फिराकर उसकी आज्ञानुसार बपतिस्मा लेंगे तो आप मसीह के एक अनुयायी बन जाएंगे। वह आपका उद्धार करके आपको अपनी कलीसिया में मिला लेगा। उसकी कलीसिया उसके द्वारा मुक्ति प्राप्त लोगों की एक मंडली है; वही उसकी आत्मिक देह और उसका राज्य भी है।

क्या आप परमेश्वर की इच्छा को मानकर उसके राज्य में शामिल होंगे ताकि आप को स्वर्ग में हमेशा का जीवन मिल सके?

उपासना का अर्थ

जे.सी. चोट

बाइबल में जिस प्रकार उपासना शब्द का उल्लेख हुआ है उसका अर्थ है सेवा, प्रशंसा, आदर, महिमा और भक्ति। उपासना को वास्तविक होने के लिए आवश्यक है कि वह एक समझदार व्यक्ति के द्वारा उस तरह से की जाए जैसे कि उस व्यक्ति की इच्छा हो जिसकी उपासना की जा रही है। परन्तु अब इस बात को हम कुछ और बारीकी से देखेंगे,

1. हम सेवा के द्वारा उपासना करते हैं

यहां सेवा का अर्थ है सहायता करना, आज्ञा मानना, काम करना, आराधना करना, इत्यादि। परमेश्वर की संतान के विषय में बाइबल कहती है कि वह एक दास है और प्रभु उसका स्वामी है। अनेक बार पौलुस अपने आप को एक दास कहकर संबोधित करता है। उसने कहा, पौलुस की ओर से जो यीशु मसीह का दास है, और प्रेरित होने के लिए बुलाया गया, और परमेश्वर के उस सुसमाचार के लिये अलग किया गया है। (रोमियों 1:1)। पतरस और याकूब ने भी 2 पतरस 1:1 तथा याकूब 1:1 में अपने विषय में यही कहा था। इससे उनका क्या तात्पर्य था? उनके कहने का अर्थ यह था कि अब वे अपना सब कुछ प्रभु को अर्पण करके वे उसकी सेवा कर रहे थे। और ऐसा ही हमें भी करना है। पौलुस एक स्थान पर कहता है, परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुमको फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अंत अनन्त जीवन है। (रोमियों 6:22)।

अब इस बात को देखने के लिये कि प्रभु किस प्रकार की सेवा चाहता है, बाइबल के निम्नलिखित पदों पर ध्यान दें, बड़ी दीनता से और आंसू बहा बहाकर, और

उन परीक्षाओं में जो यहूदियों के षड्यंत्र के कारण मुझ पर आ पड़ी; मैं प्रभु की सेवा करता ही रहा। (प्रेरितों 20:19)। अब तुम्हारी भलाई की निंदा न होने पाए। क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना-पीना नहीं; परन्तु धर्म और मिलाप और वह आनन्द है; जो पवित्रात्मा से होता है और जो कोई इस रीति से मसीह की सेवा करता है, वह परमेश्वर को भाता है और मनुष्यों में ग्रहणयोग्य ठहरता है। इसलिये हम उन बातों का प्रयत्न करें जिनसे मेल-मिलाप और एक-दूसरे का सुधार हो। (रोमियों 14:16-19)। प्रयत्न करने में आलसी न हो; आत्मिक उन्माद में भरे रहो? प्रभु की सेवा करते रहो। (रोमियों 12:11)।

हमारी सेवा के संबंध में पौलुस लिखकर कहता है, इसलिये हे भाइयो, मैं तुमसे परमेश्वर की दया स्मरण दिलाकर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ, यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है। (रोमियों 12:1)। और उस सेवा को मनुष्यों की नहीं; परन्तु प्रभु की जानकर सु-इच्छा से करो। (इफिसियों 6:7)। थुआतीरा की कलीसिया से बोलते हुए प्रभु ने कहा था, मैं तेरे कामों, और प्रेम और विश्वास और सेवा और धीरज को जानता हूं, और यह भी कि तेरे पिछले काम पहिलो से बढ़कर है। (प्रकाशितवाक्य 2:19)।

अक्सर हम उपासना को उपासना सेवा कहकर संबोधित करते हैं, यह सही है, क्योंकि हम प्रभु की सेवा कर रहे हैं। दूसरे शब्दों में, हमारा सम्पूर्ण जीवन प्रभु की सेवा में व्यतीत होता है, और इस रीति से हमारा जीवन उसकी उपासना करने में व्यतीत होता है। किन्तु यदि हम प्रभु की आज्ञानुसार नहीं चलते और उसकी सेवा नहीं करते हैं, तो हम किस प्रकार यह कर सकते हैं कि रविवार के दिन तथा अपने जीवनभर हम प्रभु की उपासना कर रहे हैं?

2. हम प्रभु की प्रशंसा करने के द्वारा उसकी उपासना करते हैं।

जब पौलुस और सीलास बंदिगृह में थे, तो लिखा है, कि आधी रात के लगभग पौलूस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और बंधुए उनकी सुन रहे थे। (प्रेरितों 16:15)। एक जगह लिखकर कि प्रभु ने हमें कितना आशीषित किया है और हमारा उसके प्रति कर्त्तव्य है, पौलुस कहता है, कि हम जिन्होंने पहिले से मसीह पर आशा रखी थी, उसकी महिमा की स्तुति के कारण हों। (इफिसियों 1:12)। फिर हम इस प्रकार पढ़ते हैं। इसलिये हम उसके द्वारा स्तुतिरूपी बलिदान, अर्थात उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिये सर्वदा चढ़ाया करे। (इब्रानियों 13:15)। पतरस लिखकर इस प्रकार कहता है, कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग में ताए हुए नाशमान सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा, और आदर का कारण ठहरे। (1 पतरस 1:7)। यदि कोई बोले तो ऐसे बोले, मानो परमेश्वर का वचन है; यदि कोई सेवा करे, तो उस शक्ति से करे जो परमेश्वर देता है; जिससे सब बातों में यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर की महिमा प्रगट हो; महिमा और समराज्य युगानुयुग उसी की है। आमीन (1 पतरस 4:11)।

हमें प्रभु की प्रशंसा हर एक बात में प्रति दिन करनी चाहिए, अपने सारे कामों और बोल-चाल के द्वारा। परन्तु विशेष रूप से प्रभु के दिन में जब हम उसकी उपासना

करने के लिये एकत्रित होते हैं, क्योंकि इसी उद्देश्य से उसकी स्तुति करने के लिये, हम इक्ट्ठे होते हैं। सबसे पहिले अपनी उपस्थिति के द्वारा हम उसकी स्तुति करते हैं, यदि हम उचित उद्देश्य के साथ आते हैं, और फिर उन सब बातों के द्वारा जिन्हें हम करते हैं हम उसकी स्तुति करते हैं। उस समय हमें दीनता के साथ आना चाहिए, और बाइबल अध्ययन, प्रार्थना, गीत गाने, और चंदा देने, और प्रभु भोज में भाग लेने के द्वारा हमें उसकी प्रशंसा करनी चाहिए। किन्तु यदि हम ऐसा नहीं करते हैं, तो फिर किस प्रकार हम उसकी प्रशंसा कर सकते हैं?

3. हम प्रभु का आदर करने के द्वारा उसकी उपासना करते है।

एक जगह प्रभु यीशु ने कहा था, इसलिये कि सब लोग जैसे पिता का आदर करते हैं वैसे ही पुत्र का भी आदर करे, जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता का जिसने उसे भेजा है आदर नहीं करता। (यूहन्ना 5:23)। पौलुस लिखकर कहता है, अब सनातन राजा अर्थात अविनाशी अनदेखे अद्वैत परमेश्वर का आदर और महिमा युगानुयुग होती रहे। आमीन (1 तीमुथियुस 1:17)।

हमें प्रभु का आदर करना है, क्योंकि उसी ने हमारा उद्धार किया है, हमें आशीषें दी हैं, और हमें एक उत्तम जीवन की आशा दी है।

4. हम प्रभु की महिमा करने के द्वारा उसकी उपासना करते है।

महिमा करने का अर्थ है बड़ाई करना, आदर करना, स्तुति करना। उपासना करने का ठीक यही अर्थ है, जैसे कि इससे पहिले अपने पाठ के आरंभ में हमने देखा था परन्तु, एक बार फिर से बाइबल के कुछ ऐसे पदों को हम देखेंगे जिनमें इसी बात को दर्शाया गया है, ताकि तुम एक मन और एक मुंह होकर परमेश्वर की बड़ाई करो। (रोमियों 15:6)। क्योंकि दाम देकर मोल लिये गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो। (1 कुरिन्थियों 6:20)। पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करें। (1 पतरस 4:16)।

हमारे जीवन की यह इच्छा होनी चाहिए कि अपनी बड़ाई तथा प्रशंसा को भूल कर हम प्रत्येक बात में परमेश्वर को ऊंचा उठाएं, उसकी प्रशंसा तथा बड़ाई करें, और उसके नाम की महिमा करें। उसकी तुलना में हम कुछ भी नहीं है। प्रभु के दिन में हम इसलिये एकत्रित होते हैं ताकि हम अपने मनों की सम्पूर्णता से उसकी ओर मन लगाकर उसकी उपासना करें।

5. हम प्रभु की उपासना करते हैं, उसके प्रति अपनी भक्ति प्रगट करके

परमेश्वर हमारा बनाने वाला और मसीह हमारा उद्धारकर्त्ता है। हमें चाहिए कि हम उनका आदर करें। हमें चाहिए कि हम उनकी सुनें। हमें चाहिए कि हम उनकी आज्ञा को मानें। हमें उनके सामने अपने आप को दीन बनाना चाहिए। हमें उनकी भक्ति करनी चाहिए। भजन संहिता की पुस्तक को लिखने वाला कहता है, उसका नाम पवित्र और भययोग्य है। (भजन संहिता 111:9)। फिर इब्रानियों की पत्री का लेखक यूं कहता है, इस कारण हम इस राज्य को पाकर जो हिलने का नहीं, उस अनुग्रह को हाथ से न जाने दें, जिसके द्वारा हम भक्ति और भय सहित, परमेश्वर की ऐसी अराधना कर सकते हैं जिससे वह प्रसन्न होता है।

किन्तु अपने मनों तथा आत्माओं को प्रभु की उपासना तथा प्रशंसा में वास्तव में

हम केवल तभी लगा सकते हैं यदि हम सच्चे मन से प्रभु से प्रेम रखते हैं, और अपने को नम्र बनाकर उसकी आज्ञा पर चलते हैं और धन्यवाद भरे हृदय से उसके सम्मुख आते हैं। और केवल तभी पौलुस की इस बात को हम भली-भांति समझ सकते हैं, और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो। (कुलुस्सियों 3:17)।

अनेक लोग मण्डली (चर्च) में उपासना के लिए केवल इसलिये जाते हैं क्योंकि उनकी ऐसी आदत पड़ गई है या फिर किसी के कहने पर वे ऐसा करते हैं। बहुतेरे लोग केवल उपासना के नियमों का ही पालन करते हैं, परन्तु वास्तव में उपासना नहीं करते। ये ऐसे लोग हैं जिन्होंने अभी तक यही नहीं सीखा कि उपासना का वास्तविक अर्थ क्या है और फलस्वरूप उन्हें इससे कुछ भी प्राप्त नहीं होता है।

अब, भविष्य में, जब हम उपासना करते हैं, तो सम्पूर्ण गंभीरता, पूरी सच्चाई तथा स्वच्छ हृदय के साथ प्रभु की स्तुति और महिमा अब और हमेशा तक करने के लिये धन्यवाद सहित उसके सम्मुख आएं। जब हम उपासना करने के अर्थ को समझ लेंगे, तो हमारे भीतर उपासना करने की इच्छा होगी, और इस प्रकार हमारे लिये और जिसकी हम उपासना कर रहे हैं, उसके सम्मुख हमारी उपासना का एक अर्थ या उद्देश्य होगा।

अनुग्रह से उद्धार

जोएल स्टीफ़न विलियम्स

हर एक इनसान के लिए पाप का दण्ड मृत्यु है। किन्तु परमेश्वर का अनुग्रह हमारा पाप से उद्धार करता है। अनुग्रह का अर्थ है: "जिसे हम अपने बल पर प्राप्त नहीं कर सकते।" अनुग्रह का अर्थ हम "खोए हुए पुत्र" की कहानी से बखूबी समझ सकते हैं। (लूका 15:11-32)। वोह पुत्र अपना सब कुछ लेकर अपने घर को छोड़कर चला गया था। अपना सब कुछ उसने बुरे कामों में लगाकर बर्बाद कर दिया था। जब उसके पास कुछ भी नहीं बचा था, तब अपना मन फिराकर उसने निश्चय करके कहा था कि अब मैं अपने पिता के पास वापस जाऊँगा और उससे क्षमा माँगकर निवेदन करूंगा कि वोह मुझे अपने घर में एक नौकर की ही तरह रख ले। पर जब वोह वापस अपने पिता के पास गया था, तो पिता ने उसे ऐसे स्वीकार कर लिया था जैसे कि उसने कोई गलती की ही नहीं थी। अर्थात उसे दण्ड मिलना चाहिए था, पर वास्तव में उसे प्रेम मिला।

हम कुछ भी देकर या करके उद्धार प्राप्त नहीं कर सकते। यह असम्भव है। हम सब के पाप परमेश्वर के विरुद्ध हैं। अच्छे और भलाई के काम करना तो हमारे लिए अनिवार्य है, परमेश्वर ने इसी के लिए हमें सृजा है। पर अपने पापों से उद्धार पाने के लिए हम कोई अच्छे काम नहीं कर सकते। यदि हम अच्छे काम करते भी हैं, तो हम उस दास के समान हैं, जिसने कहा था "हमने केवल वही किया है जो हमें करना चाहिए था" (लूका 17:10) इसीलिए बाइबल में एक स्थान पर लिखा है, कि हमारा उद्धार भले कामों के द्वारा नहीं हो सकता। (गलतियों 2:16)। यदि कामों के द्वारा उद्धार पाना सम्भव होता, तो वोह हमारा अधिकार बन जाता। तब कोई भी पाप करके हम अच्छे

काम कर लेते और पाप से स्वयं ही उद्धार पा लेते। परमेश्वर और उसके अनुग्रह की तब हमें कोई आवश्यकता ही नहीं होती। (रोमियों 4:1-8)। जैसे कि पौलुस ने कहा था : "यदि यह अनुग्रह से हुआ है, तो फिर कर्मों से नहीं; नहीं तो अनुग्रह फिर अनुग्रह नहीं रहा।" (रोमियों 11: 5-6; 2 तिमुथियुस 1:9)।

उद्धार पाने के लिए मनुष्य को नम्र बनने की आवश्यकता है। यदि हम कुछ भी करके किसी भी तरह से अपनी मुक्ति स्वयं कर पाने में सक्षम हों, तो हमें अपने आप पर घमण्ड होगा। परन्तु हमारा उद्धार केवल अनुग्रह से ही सम्भव है (रोमियों 3:27; इफिसियों 2:8-9)। प्रेरित पौलुस बड़ा ही पढ़ा लिखा और योग्य व्यक्ति था, और इसीलिए उसे अपनी योग्यताओं पर घमण्ड हो सकता था। (2 कुरिन्थियों 11:1-12:13)। परन्तु पौलुस का कहना था "मैं जो कुछ भी हूं, परमेश्वर के अनुग्रह से हूं।" (1 कुरिन्थियों 15:10) क्या पौलुस को किसी बात पर घमण्ड था? उसे परमेश्वर के उस प्रेम पर घमण्ड था जो परमेश्वर ने यीशु मसीह में होकर दिखाया था। उसने कहा था, "पर ऐसा न हो कि मैं अन्य किसी बात का घमण्ड करूं, केवल हमारे प्रभु यीशु मसीह के क्रूस का।" (गलतियों 6:14)। ''जो घमण्ड करे वोह प्रभु में घमण्ड करे" (1 कुरिन्थियों 1:31; 2 कुरिन्थियों 10:17)।

मुक्ति परमेश्वर का बरदान है, क्योंकि उद्धार परमेश्वर के अनुग्रह से ही होता है। पौलुस ने कहा था, कि हम परेमश्वर के "अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत-मेंत में धर्मी ठहराए जाते हैं।" (रोमियों 3:24)। "परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।" (रोमियों 6:23; 2 कुरिन्थियों 9:14-15; प्रकाशित. 22:17)। अब यदि उद्धार एक वरदान है और अनुग्रह से प्राप्त होता है, तो क्या इसका अर्थ यह है कि उद्धार पाने के लिए हमें कुछ भी करने की आवश्यकता नहीं है? वास्तव में यह सच नहीं है, और अब आगे इस पुस्तक में हम इसी बात पर विचार करेंगे कि उद्धार पाने के लिए मनुष्य को क्या करने की आवश्यकता है। पर इससे पहले हम इस बात पर ध्यान देंगे कि जबकि उद्धार एक वरदान है और परमेश्वर के अनुग्रह से मिलता है, तो फिर उसे प्राप्त करने के लिए हमें कुछ करने की ज़रूरत क्यों है?

उद्धार एक वरदान तो है, पर हमें स्वयं उसे प्राप्त करना ज़रूरी है। अनुग्रह से उद्धार होता है, पर "विश्वास के द्वारा" (इफिसियों 2:8)। ऐसे ही, मनुष्य को मन फिराकर परमेश्वर की आज्ञा मानना भी उद्धार पाने के लिए ज़रूरी है। सो, उद्धार पाने के लिए क्या ज़रूरी है? हमारा विश्वास? या परमेश्वर का अनुग्रह? परमेश्वर की आज्ञा मानना? या परमेश्वर का अनुग्रह? इस बात को समझने के लिये हम एक छोटा सा उदाहरण देखेंगे। मान लें कि दोपहर के वक्त आप अपने दो दोस्तों के साथ एक कमरे में हैं जिसमें एक खिड़की बनी हुई है। अब यदि आप अपने दोनों मित्रों से पूछते हैं कि उस कमरे में रोशनी कहां से आ रही है। और उनमें से एक जवाब देकर कहता है: "खिड़की से में होकर आ रही है।" पर दूसरा कहता है, कि "वोह सूरज का प्रकाश है।" अब उन दोनों में सही कौन है? दोनों सही हैं। प्रकाश सूर्य से ही आ रहा है, पर उस कमरे में उस खिड़की के द्वारा ही आ रहा है। प्रकाश का स्रोत तो सूर्य ही है, पर उस कमरे में प्रकाश खिड़की के "द्वारा" प्रवेश कर रहा है।

ऐसे ही हमारा उद्धार भी है। जैसे कि प्रकाश का स्रोत सूर्य है, वैसे ही हमारा उद्धार

करनेवाला परमेश्वर है। परन्तु परमेश्वर किसी भी मनुष्य को ज़बरदस्ती उद्धार नहीं देता। मनुष्य को उसके उद्धार को स्वीकार करने के लिए अपने मन के द्वार को खोलने की आवश्यकता है अर्थात मनुष्य के मन में विश्वास आना चाहिए (इफिसियों 2:8; रोमियों 5:1:2)। उसे अपना मन फिराकर अपने पापों की क्षमा पाने के लिए प्रभु की आज्ञा मानकर बपतिस्मा लेना चाहिए। इससे यह अभिप्राय नहीं है कि ऐसा करके हम अपने कामों से या अपने बल से उद्धार प्राप्त कर रहे हैं। किन्तु ऐसा करने का अभिप्राय परमेश्वर की आज्ञा मानने से है। जैसे कि पौलुस ने एक जगह लिखकर कहा था, कि "उसने हमारा उद्धार किया; और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान (बपतिस्मा) और पवित्रात्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ।" (तीतुस 3:5; प्रेरितों 2:38; 22:16; 1 पतरस 3:21)

अनुग्रह के द्वारा उद्धार प्राप्त कर लेने का अभिप्राय यह नहीं है, कि फिर इनसान कैसा भी जीवन व्यतीत करे। मनुष्य को परमेश्वर के अनुग्रह को ऐसे नहीं लेना चाहिए कि वोह परमेश्वर के अनुग्रह से कभी वंचित नहीं हो सकता। अर्थात ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि चाहे हम कुछ भी करें, परमेश्वर अपने अनुग्रह से हमें क्षमा कर देगा। (रोमियों 6:1-2; 2 परतस 2:17-22; यहूदा 4)। अनुग्रह के सम्बन्ध में पौलुस ने इस प्रकार कहा था: "क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह से ही तुम्हारा उद्धार हुआ है और यह तुम्हारी ओर से नहीं, किन्तु परमेश्वर का दान है, और न कर्मो के कारण ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे।" (इफिसियों 2:8-9)।

बपतिस्मा लेने से पहले उद्धार

जॉन स्टेसी

इससे अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न और कोई दूसरा नहीं हो सकता, उद्धार पाने के लिये मैं क्या करूं? इस प्रश्न का सही उत्तर मानने के लिये हम केवल परमेश्वर के वचन की पुस्तक में से देख सकते हैं। कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि मनुष्य का उद्धार मसीह में केवल विश्वास कर लेने से ही हो जाता है, परन्तु बाइबल हमें ऐसा कतई नहीं सिखाती। केवल विश्वास लाने से उद्धार लाना क्यों असंभव है? इसलिये क्योंकि बाइबल स्पष्टता से यह कहती है कि जो विश्वास परमेश्वर की आज्ञा नहीं मानता वह विश्वास उद्धार नहीं कर सकता। याकूब 2:24 में लिखा है कि, "मनुष्य केवल विश्वास से ही नहीं वरन कर्मो से भी धर्मी ठहरता है।" याकूब 2:26 के अनुसार, निदान जैसे देह आत्मा बिना मरी हुई है, वैसे ही विश्वास भी कर्म बिना मरा हुआ है।" जो लोग यीशु की आज्ञा नहीं मानते हैं उन्हें उसे अपना प्रभु कहने का कोई अधिकार नहीं है। यीशु ने लूका 6:46 में कहा था कि, "जब तुम मेरा कहना नहीं मानते तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो?" केवल वे ही जो परमेश्वर की मर्जी को मानते हैं उद्धार पाएंगे। क्योंकि मत्ती 7:21 में यीशु ने कहा था कि, "जो मुझ से हे प्रभु, हे प्रभु कहता है उन में से हर एक स्वर्ग के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा, परन्तु वहीं जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चलता है।" फिर, बाइबल यह भी सिखाती हे, कि केवल विश्वास से मनुष्य का उद्धार इसलिये भी नहीं होगा क्योंकि बहुतेरे

लोग केवल विश्वास तक ही सीमित रहते हैं। यूहन्ना 12:42, 43 में हम कुछ ऐसे ही लोगों के बारे में यूं पढ़ते हैं, "तौभी सरदारों में से भी बहुतों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु फरीसियों के कारण प्रकट में नहीं मानते थे, ऐसा न हो कि आराधनालय में से निकाले जाएं क्योंकि मनुष्यों की प्रशंसा उनको परमेश्वर की प्रशंसा से अधिक प्रिय लगती थी।" यूहन्ना 8:30 में लेखक कहता है, कि यीशु "ये बातें कह ही रहा था, कि बहुतेरों ने उस पर विश्वास किया।" किन्तु उन्हीं विश्वासियों को सम्बोधित करके, यूहन्ना 8:44 में, यीशु ने कहा था, कि तुम अपने पिता शैतान से हो" क्योंकि याकूब 2:19 में लिखा है कि तुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है, तू अच्छा करता है, दुष्टात्मा भी विश्वास करते और थरथराते है।" सो दुष्टात्मा भी विश्वास करते हैं। पर क्या उनका भी उद्धार होगा? आप इसका जवाब अच्छी तरह से जानते हैं। फिर यदि केवल विश्वास से ही उद्धार हो सकता था, तो फिर बाइबल में कुछ और ऐसी बातों का वर्णन क्यों हुआ है कि उन्हें मानना उद्धार पाने के लिये जरूरी है? जैसे कि लिखा है, कि सुसमाचार को सुनना आवश्यक है। रोमियों 10:14 में लिखा है, और जिसकी नहीं सुनी उस पर क्योंकर विश्वास करें?" प्रेरितों 18:8 में लिखा है, और बहुत से कुरिन्थी सुनकर विश्वास लाए और बपतिस्मा लिया। सो, विश्वास लाने के लिए सुनना जरूरी है। ऐसे ही उद्धार पाने के लिये पाप से मन फिराना भी आवश्यक है। प्रेरितों 17:30 में लिखा है कि परमेश्वर अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है। यीशु को प्रभु कहकर अंगीकार करना भी आवश्यक है। रोमियों 10:9-10 में हम पढ़ते हैं, "क्योंकि धर्मिकता के लिये मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिये मुंह से अंगीकार किया जाता है।" और "यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे... तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।" और ऐसे ही बपतिस्मा लेना (पानी के भीतर गाड़े जाना) भी आवश्यक है। पतरस ने प्रेरितों 2:38 में लोगों से कहा था कि "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले, तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।"

हनन्याह ने शाऊल के पास आकर उससे कहा था कि, "अब क्यों देर करता है? उठ, बपतिस्मा ले, और उसका नाम लेकर अपने पापों को धो डाल।" (प्रेरितों 22:16)। बपतिस्मे के विषय में पतरस ने 1 पतरस 3:21 में कहा था कि "उसी पानी का दृष्टांत भी, अर्थात बपतिस्मा.... अब तुम्हें बचाता है।" इन बातों पर सारी गंभीरता के साथ विचार कीजिए।

पिन्तेकुस्त के दिन मसीह के राज्य की स्थापना

जिम ई. वॉलड्रन

भाग २

पतरस ने उन लोगों को निश्चित रूप से विश्वास दिला दिया था कि परमेश्वर ने यीशु नासरी को सचमुच में ज़िंदा करके उसे अपने दाहिने हाथ पर बैठाकर राज्य

करने के लिये दाऊद के सिंहासन पर बैठा दिया है, जिस प्रकार से उसने उस समय से दस सदी पूर्व उससे प्रतिज्ञा करके कहा था:

"जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी, और तू अपने पुरखाओं के संग सो जाएगा, तब मैं तेरे निज वंश को तेरे पीछे खड़ा करके उसके राज्य को स्थिर करूंगा। मेरे नाम का घर वही बनवाएगा, और मैं उसकी राजगद्दी को सदैव स्थिर रखूंगा।" (2 शमूएल 7:12-13)।

लेकिन उन लोगों के इस प्रश्न के उत्तर में कि हम क्या करें? पतरस ने, जो पवित्र आत्मा की प्रेरणा से प्रेरित था और जिसे प्रभु ने स्वर्ग के राज्य की कुजियाँ देने की प्रतिज्ञा की थी (मत्ती 16:19), उन से इस प्रकार कहा था:

"मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी संतानों और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा। उसने बहुत और बातों से भी गवाही दे देकर समझाया कि अपने आप को इस टेढ़ी जाति से बचाओ। अत: जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया; और उसी दिन तीन हज़ार लोगों के लगभग उन में मिल गए। और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने और संगति रखने और रोटी तोड़ने, और प्रार्थना करने में लौलीन रहे।" (प्रेरितों 2:38-42)।

जब उन यहूदी लोगों ने विश्वास कर लिया था, तो उन्हें दो काम करने को कहा गया था: एक तो मन फिराओ और दूसरे बपतिस्मा लो, जिससे उन्हें दो आशीषें प्राप्त होंगीं, अर्थात् उन्हें पापों की क्षमा मिलेगी और पवित्र आत्मा का दान मिलेगा। पापों की क्षमा प्राप्त होने का तात्पर्य इस बात से था कि उनके सारे पिछले जीवन के पापों से उन्हें मुक्ति मिल जाएगी; और इसलिये उनका विवेक शुद्ध हो जाएगा (1 पतरस 3:20-21)। और पवित्र आत्मा के मिल जाने का अर्थ था कि उनकी देह परमेश्वर का मन्दिर बन जाएगी, जैसे कि लिखा है:

"क्या तुम नहीं जानते कि तुम्हारी देह पवित्र आत्मा का मन्दिर है, जो तुम में बसा हुआ है और तुम्हें परमेश्वर की ओर से मिला है; और तुम अपने नहीं हो? क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिये अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो।" (1 कुरिन्थियों 6:19-20)।

पवित्र आत्मा एक मसीही जन के भीतर ठीक उसी तरह से बास करता है जैसे कि स्वयं परमेश्वर करता है, जैसे कि हम पढ़ते हैं:

"और मूर्तियों के साथ परमेश्वर के मन्दिर का क्या संबंध है? क्योंकि हम तो जीवते परमेश्वर के मन्दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है, मैं उनमें बसूंगा और उनमें चला-फिरा करूंगा, और मैं उनका परमेश्वर हूंगा, और वे मेरे लोग होंगे।" (2 कुरिन्थियों 6:16)।

अब प्रश्न यह है, कि परमेश्वर, यीशु मसीह और पवित्र आत्मा एक मसीही जन के भीतर किस प्रकार रहते हैं? मसीह यीशु के विषय में लिखा है:

"और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रभु में जड़ पकड़कर और नींव डालकर सब पवित्र लोगों के साथ भली-भाँति समझने की

शक्ति पाओ कि उसकी चौड़ाई और लम्बाई, और ऊंचाई और गहराई कितनी है, और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ।" (इफिसियों 3:17-19)।

इसी प्रकार, पवित्र आत्मा के एक मसीही के भीतर रहने के विषय में हम इस प्रकार पढ़ते हैं:

"यह इसलिये हुआ कि अब्राहम की आशीष मसीह यीशु में अन्य जातियों तक पहुंचे, और हम विश्वास के द्वारा आत्मा को प्राप्त करें जिसकी प्रतिज्ञा हुई है।" (गलतियों 3:14; इफिसियों 5:18)।

यहाँ, थोड़ा रूककर, हम पतरस की उस बात पर ध्यान करें जो उसने पिन्तेकुस्त के दिन यीशु के बारे में कही थी कि वह प्रभु और मसीह ठहराया जाकर परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठकर राज्य करेगा:

"इसी यीशु को परमेश्वर ने जिलाया, जिसके हम सब (अर्थात् प्रेरित) गवाह हैं। इस प्रकार परमेश्वर के दाहिने हाथ से सर्वोच्च पद पाकर, और पिता से वह पवित्र आत्मा प्राप्त करके जिसकी प्रतिज्ञा की गई थी, उसने यह उंडेल दिया है जो तुम देखते और सुनते हो। क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा; परन्तु वह आप कहता है, प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों तले की चौकी न कर दूं। अतः अब इस्राएल का सारा घराना निश्चित रूप से जान ले कि परमेश्वर ने उसी यीशु को जिसे तुमने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।" (प्रेरितों 2:32-36)।

इसी वास्तविकता को सामने रखकर प्रेरित पौलुस ने फिलिप्पी में कलीसिया को लिखकर इस प्रकार कहा था:

"इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान् भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है, कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और पृथ्वी के नीचे हैं, वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें, और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु हैं।" (फिलिप्पियों 2:9-11)।

प्रेरितों ने और भविष्यवक्ताओं ने न केवल यह सिखाया ही था कि यीशु ही सब के प्रभु हैं, पर वे यह भी आशा रखते थे कि इस बात को सभी अन्य लोग भी स्वीकार कर लें।

सो हम देखते हैं कि पिन्तेकुस्त के उस दिन लगभग 3000 यहूदी सुसमाचार को मानकर मसीह के राज्य के सबसे "पहले सदस्य" बन गए थे। उसी दिन से लेकर यीशु के प्रेरितों ने और अनुयायियों ने उसके राज्य के सुसमाचार का प्रचार करना आरंभ कर दिया था, और अनेकों लोग सुसमाचार को सुनकर और मानकर अपने पापों से उद्धार पाकर यीशु के राज्य में शामिल होने लगे थे, और परिणाम स्वरूप कलीसिया बड़ी तेज़ी से आगे बढ़ने लगी थी, जैसा कि हम पढ़ते हैं, "वचन के सुननेवालों में से बहुतों ने विश्वास किया, और उनकी गिनती पाँच हज़ार लोगों के लगभग हो गई।" (प्रेरितों 4:4)।

उन लोगों ने पाप और अंधकार से छुटकारा पाकर ज्योति के राज्य में प्रवेश कर लिया था, जैसे कि प्रेरित पौलुस ने अपने और कुलुस्से में रहने वाले मसीही लोगों

के बारे में लिखकर कहा था:

> "और पिता का धन्यवाद करते रहो, जिसने हमें इस योग्य बनाया कि ज्योति में पवित्र लोगों के साथ मीरास में सहभागी हों। उसी ने हमें अंधकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया। जिस में हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।" (कुलुस्सियों 1:12-14)।

यह बात ध्यान देखने योग्य है कि वे सभी लोग पौलुस के साथ यीशु के राज्य में मिल गए थे, उसी प्रकार से जैसे कि प्रेरितों 2 अध्याय में वे लोग उन में मिल गए थे जिनसे पतरस ने मन फिराकर बपतिस्मा लेने को कहा था। वे सब परमेश्वर के घराने में मिलाए गए थे, और उनके बारे में लिखा है कि वे:

> "परमेश्वर की स्तुति करते थे, और सब लोग उनसे प्रसन्न थे: और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।" (प्रेरितों 2:47)।

यही मसीह की कलीसिया थी, कोई सम्प्रदाय नहीं, परन्तु वही कलीसिया जिसे बनाने की प्रतिज्ञा स्वयं मसीह ने की थी। (मत्ती 16:18-19)। कलीसिया शब्द यूनानी भाषा से लिया गया है, जिसका अर्थ है "एक मंडली" या "सभा" (देखिये प्रेरितों 19:41)। जब पतरस ने उन लोगों को आज्ञा देकर कहा था, प्रेरितों 2:38 के अनुसार, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे" तो यह दिखाता है कि इस प्रकार उसने स्वर्ग के राज्य की कुंजियों का इस्तेमाल किया था, जिन्हें देने को प्रतिज्ञा यीशु ने उस से की थी। (मत्ती 16:19)। अर्थात् नया जन्म पाकर परमेश्वर और मसीह के राज्य में शामिल होने के लिये ज़रूरी है कि प्रत्येक व्यक्ति मसीह में विश्वास लाए और मन फिराकर पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले। (यूहन्ना 3:5; इफिसियों 5:5; रोमियों 6:3-4; गलतियों 3:26-27; तीतुस 3:5)।

ऐसा करके मनुष्य कोई धर्म का काम नहीं करता है, जिसके द्वारा किसी का भी उद्धार नहीं हो सकता (इफिसियों 2:8-9)। परन्तु ये परमेश्वर की आज्ञाएं हैं जिन्हें मानने के द्वारा मनुष्य को परमेश्वर की आशीष प्राप्त होती है।

इस बात का एक उदाहरण हमें पुराने नियम में नामान के बारे में मिलता है जो आज्ञा मानकर अपने कोढ़ से शुद्ध हुआ था (इसवी पूर्व 894) जैसा कि हम 2 राजा 5:1-14 में पढ़ते हैं। वह सीरिया देश से इस्राएल में परमेश्वर के एक भविष्यवक्ता के पास अपने कोढ़ से शुद्ध होने के लिये आया था, और भविष्यवक्ता एलीशा ने उस से कहा था कि तू जाकर सात बार यरदन के पानी में डुबकी लगा ले तो तू शुद्ध हो जाएगा। और जब उसने ऐसा किया था तो लिखा है कि वह शुद्ध हो गया था और उसका शरीर "छोटे लड़के का सा हो गया" था।

उसे उसके कोढ़ से शुद्ध करने के लिये उस नदी के पानी में कोई ताकत नहीं थी, पर जब उसने परमेश्वर की आज्ञा मानी थी तो वह चंगा हो गया था। इसी प्रकार आज मसीह के सुसमाचार के इस अंतिम युग में आवश्यक है कि हर एक जन परमेश्वर के वचनानुसार अपने-अपने पापों से मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा ले, जैसे कि लिखा है:

> "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिये

यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे। क्योंकि यह प्रतिज्ञा तुम, और तुम्हारी संतानों और उन सब दूर-दूर के लोगों के लिये भी है जिनको प्रभु हमारा परमेश्वर अपने पास बुलाएगा।" (प्रेरितों 2:38-39)।

कोई भी व्यक्ति ऐसा समझकर परमेश्वर की आज्ञा मानने से नहीं बच सकता कि मन फिराना और बपतिस्मा लेना तो स्वयं मनुष्य के अपने ही धार्मिकता के कार्य हैं और इसलिये उद्धार पाने के लिये, इन्हें मानना आवश्यक नहीं है, पर वास्तव में ये तो परमेश्वर की आज्ञाएं हैं और इन्हें मानना ज़रूरी है। (प्रेरितों 22:16; रोमियों 6:3-4; गलतियों 3:26-27)।

अब हम फिर से उस पिन्तेकुस्त के दिन के घटनाक्रम को देखेंगे जो यीशु के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद घटा था। उस दिन चार बातें विशेष रूप से घटी थीं: (1) यीशु परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठकर सिंहासन पर विराजमान हुए थे (देखिए, भजन. 110:1; प्रेरितों 2:34-35); (2) उसके राज्य की स्थापना ठीक उसी समय हुई थी जिस प्रकार दानिय्येल ने भविष्यवाणी करके कहा था (दानिय्येल 2:44); (3) राज्य की स्थापना प्रेरितों के जीवनकाल में ही हुई थी जिस प्रकार यीशु ने उनसे प्रतिज्ञा करके कहा था (मरकुस 9:1; प्रेरितों 1:8; 2:1-4); और (4) उसके लोग उसके पराक्रम के दिन उसके पास स्वेच्छा से आए थे (भजन संहिता 110:3) जिस प्रकार लिखा है, "अत: जिन्होंने उसका वचन ग्रहण किया उन्होंने बपतिस्मा लिया" (प्रेरितों 2:41)।

इब्रानियों की पत्री के लेखक ने यहूदी मत से आए चेलों से यीशु के बारे में इस प्रकार कहा था:

"पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यवक्ताओं द्वारा बातें कर, इन अंतिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है। वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ्य के वचन से संभालता है। वह पापों को धोकर ऊंचे स्थानों पर महामहिमन् के दाहिने जा बैठा।" (इब्रानियों 1:1-3)।

उपरोक्त लिखी बातें इस तथ्य की पुष्टि करती हैं, कि यीशु (वर्तमान में) राजाओं का राजा बनकर परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठा है। उसी लेखक ने यह भी कहा था कि परम पिता परमेश्वर ने "पुत्र" के विषय में यूं कहा था:

"हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा: तेरे राज्य का राजदण्ड न्याय का राजदण्ड है।" (इब्रानियों 1:8)।

यहाँ से हम देखते हैं कि परम पिता ने पुत्र को "परमेश्वर" कहकर संबोधित किया था, परन्तु तौभी अनेकों ऐसे लोग हैं जो पुत्र को परमेश्वर मानने से इंकार करते हैं। कुछ अन्य लोगों का कहना है कि यीशु की सृष्टि की गई थी, या वह एक स्वर्गदूत के समान है। लेकिन इब्रानियों की पत्री का लेखक उन लोगों की मूर्खतापूर्वक बातों के विरोध में फिर इस प्रकार कहता है:

"और स्वर्गदूतों में से उसने किस से कब कहा, "तू मेरे दाहिने बैठ, जब तक

कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पाँवों के नीचे की पीढ़ी न कर दूं।" (इब्रानियों 1:13)।

और फिर, इसी पुस्तक के लगभग अंत में लिखकर वह उन लोगों से कहता है, जो यहूदी मत में से निकलकर मसीही बने थे, कि उन्हें मसीह के राज्य में प्रवेश पाकर परमेश्वर के प्रति धन्यवादी बनना चाहिए:

"इस कारण हम इस राज्य को पाकर जो हिलने का नहीं कृतज्ञ हों, और भक्ति और भय सहित परमेश्वर की ऐसी आराधना करें जिससे वह प्रसन्न होता है।" (इब्रानियों 12:28)।

चरवाहे के भेड़ों और बकरियों को अलग करने का दृष्टांत (मत्ती 25:31-46)

यह उन कई दृष्टांतों में से अंतिम है, जो यीशु अध्याय 21 में बताने लगा था। उसके दृष्टांत अधिकतर फलस्तीन में रहने वाले लोगों के आम अनुभवों की घटनाओं से संबंधित होते थे, परन्तु यह दृष्टांत अलग है क्योंकि यह भविष्य की एक घटना को दिखाता है। यह कहानी चाहे एक चरवाहे द्वारा भेड़ों और बकरियों को अलग किए जाने की है पर इसमें अंतिम न्याय की सच्चाईयां बताई गई हैं।

आयत 31. यीशु ने दृष्टांत का आरंभ यह करते हुए किया कि मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा। 24:30 में उसने ही अपने द्वितीय आगमन के बारे में कुछ विवरण दिया था कि वह बड़ी सामर्थ और ऐश्वर्य के साथ आकाश के बादलों पर आएगा। यह महिमा परमेश्वर पिता से मिलती है (मत्ती 16:27)। यह वही महिमा है, जो संसार की सृष्टि से पहले पिता के साथ यीशु की थी (यूहन्ना 17:5)।

प्रभु की वापसी के समय सब स्वर्गदूत उसके साथ होंगे। मत्ती की पुस्तक में और कहीं पर स्वर्गदूतों को कटाई करने वालों के रूप में दिखाया गया है, जो अंतिम न्याय के समय दुष्टों को धर्मियों से अलग करते हैं (मत्ती 13:39, 41, 49)। यीशु की वापसी के समय बड़ी तुरही फूंकी जाएगी और स्वर्गदूत चारों दिशाओं से उसके चुने हुओं को इक्ट्ठा करेंगे" (मत्ती 24:30, 31)।

उस समय मसीह अपनी महिमा के सिंहासन पर विराजमान होगा। मनुष्य के पुत्र के सिंहासन पर विराजमान होने का विषय दानि. 7:13, 14 में देखा जा सकता है। यहां पर सिंहासन राजा और न्यायी के रूप में उसके अधिकार पर जोर देता है। कुछ आयतों में परमेश्वर पिता को न्यायी के रूप में दिखाया गया है, जैसे अन्य वचनों (इसमें भी) में यीशु को बताया गया है। प्रेरितों 17:30, 31 यह स्पष्ट करता है कि परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा संसार का न्याय करेगा (देखें यूह. 5:22, 27)। द्वितीय आगमन पर यीशु हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा (मत्ती 16:27)।

प्रिमिलेनियजम अर्थात हजार वर्ष के राज्य की शिक्षा के विपरीत कोई आयत न यह सिखाती है और न कोई संकेत देती है कि यीशु रैप्चर के लिए वापस आएगा और बाद में उद्धार पाए हुओं को अनन्तकाल के लिए स्वर्ग में ले जाने से पहले एक हजार वर्ष तक पृथ्वी पर राज करने के लिए वापस आएगा (यूह. 5:24-29; प्रेरितों 10:42; 17:30, 31; 2 कुरि. 5:10; 2 थिस्स, 1:6-10; 22 तीमु. 4:1)।

आयत 2. यीशु ने कहा कि जब वह दोबारा आएगा तब सब जातियां उसके सामने इक्ट्ठी की जाएंगी। यहां पर यीशु सब लोगों की बात कर रहा था चाहे वे यहूदी हो या अन्य जाति, मसीही हों या गैर मसीही। न्याय केवल एक ही होगा और जो भी कोई इस संसार में रहा है या रहा है, वह वहां पर होगा (मत्ती 13:36-43; यूह. 5:27-29; 1 कुरि. 15:52; 2 कुरि. 5:10; प्रका. 20:11, 12)।

फिर यीशु ने कहा, जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग कर देता है, वैसे ही वह उन्हें एक-दूसरे से अलग करेगा। जातियां के लिए यूनानी शब्द चाहे अलिंगी शब्द है, परन्तु सर्वनाम उन्हें पुरुषवाचक है। यह बात संकेत देती है कि सब जातियों के लोगों का न्याय व्यक्तिगत रूप से होगा न कि सामूहिक रूप से।

बाइबल में परमेश्वर के लोगों के लिए आमतौर पर भेड़ के रूपक का इस्तेमाल किया गया है, चाहे यह पुरानी वाचा के अधीन इस्राएलियों के लिए हो या नई वाचा के अधीन यीशु के चेलों के लिए। भेड़ें उन लोगों को कहा गया है, जो विनम्रता से अच्छे चरवाहे के पीछे चलते हैं, जबकि बकरियां उन लोगों को जो कठोर, विरोधी और विनाशकारी हैं (यहेजकेल 34:17; दानिय्येल 8:5, 7, 21)।

पूरे मत्ती रचित सुसमाचार में एक दोहरा विभाजन मिलता है। गेहूं और भूसी (मत्ती 3:12), संकेत और चौड़े मार्ग (मत्ती 7:13, 14), अच्छे और बुरे फल (मत्ती 7:15-20), और समझदार और मूर्ख बनाने वाले (मत्ती 7:24-27), गेहूं और जंगली बीज (मत्ती 13:24-30), अच्छी और बुरी मछलियां (मत्ती 13:47-50), दो पुत्रों (मत्ती 21:28-32), विवाह की तैयारी और बिना तैयारी किए अतिथि (मत्ती 22:1-14), समझदार और मूर्ख कुंवारियों (मत्ती 25:1-13), और भेड़ों और बकरियों (मत्ती 25:32, 33) में विभाजन दिखाई देता है। इन अंतरों से संकेत मिलता है कि उद्धार पाए हुओं और खोए हुओं में स्पष्ट अन्तर है।

आयत 33. पशुओं को अलग करते हुए चरवाहा भेड़ों को अपने दाहिनी ओर और बकरियों को बाई और खड़ी करेगा। भेड़ें अधिक मूल्य के पशु होते हैं और धर्मी लोगों को दर्शाते हैं। इस कारण उन्हें उसकी दाहिनी ओर सम्मान का स्थान दिया जाएगा (मत्ती 20:21; मत्ती 22:44; 26:64; प्रेरितों 2:33, 34; 5:31; 7:55, 56)। बकरियां जो दुष्टों को दर्शाती हैं, बाई और रखी गई हैं जो कि कम चाहने योग्य स्थिति है।

आयत 34. चरवाहा यहां राजा को कहा गया है, जो महिमा के सिंहासन पर उसके बैठने के पिछले विवरण से मेल खाता है (मत्ती 25:31)। अपनी दाहिनी ओर धर्मियों (भेड़ों) को सम्बोधित करते हुए वह कहेगा, हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि के तुम्हारे लिए तैयार किया हुआ है।

इस भौतिक संसार की नींव रखे जाने के समय, परमेश्वर ने अपने अनन्त राज्य की भी नींव रखी थी। पृथ्वी पर राजय (कलीसिया) की स्थापना के लिए आवश्यक था कि यीशु संसार के पापों के लिए मनुष्य बने और दुख उठाए। अपनी मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के बाद यीशु ने ग्रेट कमीशन दिया। इसका आरंभ उसने यह कहते हुए किया कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है (मत्ती 28:18)। पिता के पास ऊपर उठाए जाने पर उसने उस सिंहासन पर बैठकर परमेश्वर के राज्य पर राज करना आरंभ कर दिया (प्रेरि. 2:32-36)। वह तब तक राज करेगा, जब तक सारी प्रधानता और सारा अधिकार, और सामर्थ का अन्त करके अपने बैरियों को अपने पांवों तले लाकर राज्य को परमेश्वर पिता के हाथ में सौंप नहीं देता (1 कुरि. 15:24, 25)। तब पृथ्वी पर

परमेश्वर का राज्य स्वर्ग में परमेश्वर का अनन्त राज्य बन जाएगा (2 पत. 1:11)। इस आयत में इसी स्वर्गीय मीरास को दिखाया गया है।

आयतें 35, 36. यीशु ने कुछ स्पष्ट कारण बताए कि कुछ लोगों को पिता की आशिषों में प्रवेश कराया जाएगा। उसने कहा कि जब वह भूखा, प्यासा नंगा और बेघर था तो उन्होंने उसकी आवश्यकताओं को पूरा किया था। जब वह बीमार और बंदीगृह में था तो वह उससे मिलने गए थे। इस दृष्टांत में न्याय का एकमात्र आधार नकारात्मक आज्ञाओं (तू न करना) के जुड़ने के बजाय सकारात्मक आज्ञाओं (तू करना) को मानना है। जोर इस बात पर है कि यीशु ने विश्वास की अवधारणा को जिसकी केवल विश्वास के रूप में गलत परिभाषा की जाती है, के विपरीत भले कार्य दिए (याकू. 2:14-17; 1 यूह. 3:17)।

भले कार्यों पर जोर देने का अर्थ यह नहीं माना जाना चाहिए कि व्यक्ति अपना उद्धार स्वयं कमा सकता है। धर्मी भेड़ों में गिने जाने के लिए मसीह में होना अर्थात क्रूस पर प्रायश्चित की उसकी मृत्यु के लाभ लेना आवश्यक है (रोमि. 6:3, 4, 8:1)। यह वचन राज्य के सुसमाचार से मेल नहीं खाता जो उद्धार को ईश्वरीय दान के रूप में दिखाता है। पौलुस जिसने बार-बार अनुग्रह की बात की, ने भी भले कार्यों के महत्व पर जोर दिया (2 कुरि. 5:10; गला. 6:7-10)। भले कार्यों के रूप में धार्मिकता का महत्व बताते हुए यीशु इसे एक बड़े संदर्भ के रूप में बताता है जिनमें परमेश्वर अपने लोगों के लिए उद्धार देते हुए उनके प्रति अनुग्रह से काम करता है।

परमेश्वर के अनुग्रह का विषय मत्ती रचित सुसमाचार की पूरी पुस्तक में मिलता है। जन्म के बाद मसीहा का नाम "यीशु" रखा जाना था क्योंकि "उसने अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार" करना था (मत्ती 1:21)। अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने अपने सुनने वालों को उसमें असली आराम पाने के लिए आमंत्रित किया (मत्ती 11:28-30)। अपने मिशन का उद्देश्य बताते हुए यीशु ने कहा था कि वह इसलिए आया कि बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे (मत्ती 20:28)। इसके अलावा प्रभु भोज की स्थापना करते हुए यीशु ने स्पष्ट कर दिया था कि उसका लहू बहुतों के लिए पापों की क्षमा निमित्त बहाया जाना था (मत्ती 26:28)।

आयतें 37-39. धर्मी लोग जिन्हें अपने भले कार्यों के लिए सराहा गया था, पूछने लगे, हे प्रभु हमने कब तेरे लिए यह सब किया? यह प्रश्न उन विश्वासियों के लिए विशेषकर उपयुक्त होना था, जिन्होंने प्रभु को देह में कभी नहीं देखा।

भूख मिटाना, भूखे को खिलाना, प्यासे को पिलाना और नंगे को कपड़े पहनाना मानवीय दयालुता के बुनियादी काम हैं (अय्यूब 22:6, 7; नीति. 25:21; यशा. 58:7; यहे. 18:7, 16; 10:42; मर. 9:41; रोमि. 12:20; याकू. 2:15, 16)।

नंगा के लिए यूनानी शब्द जिम्नेजियम शब्द से संबंधित है, क्योंकि यूनानी लोग पारम्परिक रूप से नंगे व्यायाम करते थे। नये नियम में बिना ओढ़ने के नंगा (मरकुस 14:52) व अपर्याप्त कपड़े पहनने, नंगा, उघाड़ा (याकू. 2:15) या कम कपड़े पहनने, बाहरी वस्त्र के बिना (यूह. 21:7) हो सकता है। इस संदर्भ में इस शब्द का संकेत संभवतया बिना पर्याप्त कपड़े पहनने के लिए है; किसी ऐसे व्यक्ति को मिलना बहुत ही कम होगा जिसके पास कोई कपड़ा हो ही न।

प्राचीन काल में परदेशी की मेहमान नवाजी (आतिथ्य सत्कार) करना एक सामान्य शिष्टाचार था (उत्प. 18:1-8; न्या. 19:16-21; अय्यू. 31:32; प्रेरि. 10:23; 1 तीमु.

5:10; इब्रा. 13:2; 3 यूह. 5)। यूनानी रोमी संस्कृति के बाहर घूमने पर जोर देने के प्रभाव से फलस्तीन में बहुत सी सरायें बन गई थीं। परन्तु यह अपने बुरे नाम के लिए प्रसिद्ध थीं, और यहूदियों और मसीही लोगों द्वारा समान रूप से विशेषकर इससे दूर रहा जाता था। यीशु ने लिमिटेड कमीशन पर अपने प्रेरितों को जब भी भेजा, उसने उन्हें सरायों में रहने को नहीं कहा। इसके बजाय उसने उन्हें जिस नगर या गांवों में वे जाते थे, वहां किसी योग्य व्यक्ति को ढूंढ़कर उसके घर रहने की आज्ञा दी (मत्ती 10:11)।

बीमारो के साथ-साथ विधवाओं और अनाथों की सुधि लेना (याकू. 1:27) दयालुता का एक और काम था। याकूब ने एक ऐसी स्थिति दिखाई जिसमें एक बीमार मसीही कलीसिया के प्राचीनों यानी ऐल्डरों को बुलाता है। वे उस पर प्रार्थना करें और तेल से उसे अभिषेक करें, जो उसकी चंगाई का संकेत (और शायद इसमें सहायक) था (याकू. 5:14)।

बंदीगृह में वे विश्वासी थे जिन्हें अन्यायपूर्ण ढंग से दोषी बना दिया गया था (इब्रा. 13:3)। इन कैदियों के प्रति सहानुभूति दिखाना किसी के नाम और स्वतंत्रता के लिए खतरा हो सकता था। बेड़ियों में बंधे कैदियों को सामान्य अपराधी माना जाता था और उनके विश्वासयोग्य मित्रों को भी अपमान की दृष्टि से देखा जाता था, जैसे वे उनके साथ ही दोषी हों। जेल में और नजरबंद रहते समय पौलुस को उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उसका ध्यान रखने वालों से मिलने की अनुमति होती थी (प्रेरि. 24:23; 28:30, 31)।

आयत 40. राजा ने अपने प्रश्न पूछने वालों को यह कहते हुए उत्तर दिया, तब राजा उन्हें उत्तर देगा, मैं तुम से सच कहता हूं कि तुमने जो मेरे इन छोटे से छोटे भाइयों में से किसी एक के साथ किया, वह मेरे ही साथ किया। यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया था, जो तुम्हें ग्रहण करता है, वह मुझे ग्रहण करता है; और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मुझे भेजने वाले को ग्रहण करता है (मत्ती 10:40)।

मेरे इन भाइयों वाक्यांश को मसीही लोगों के हवाले से समझा जाना चाहिए। यीशु ने जोर दिया कि जो लोग उसके आज्ञाकारी हैं, वे उसका आत्मिक परिवार हैं (मत्ती 12:49, 50; लूका 8:21)। मसीही लोग एक-दूसरे के लिए जो कुछ भी कर रहे होते हैं, वे मसीह के लिए करते हैं। मसीह की देह अर्थात कलीसिया की आवश्यकताओं की पूर्ति करके मसीह का सच्चा सेवक बनना साबित किया जाता है (इफि. 1:22, 23)। यीशु यहां केवल दान की बात नहीं कर रहा था। वास्तव में वह अपने चेलों की सहायता के लिए आवश्यकता की बात कर रहा था। जब हम यीशु की बातों को समझ जाते हैं, तो हम देखेंगे जैसा कि जेम्स बर्टन काफ़मैन ने देखा कि लोग जो कुछ उसकी कलीसिया के लिए करते हैं, वो उसके लिए करते हैं।

इन छोटे से छोटे को स्पष्ट करते हुए यीशु ने अपनी बात पक्की की। आमतौर पर यीशु के अधिक प्रसिद्ध चेलों पर ध्यान दिया जाता है जबकि कम प्रभावी चेलों को नजरअंदाज कर दिया जाता है। (मत्ती 10:42; 186, 10, 14)। यीशु के चेलों को निर्बल और निःसाह लोगों के प्रति उसकी करूणा का अनुकरण करना आवश्यक है (मत्ती 11:5; लूका 4:18)।

आयत 41. यहां पर राजा ने अपना ध्यान अपनी बाई ओर दुष्टों (बकरियों) की ओर किया। उसने श्रापित लोगों से कहा, मेरे सामने से चले जाओ दण्ड दिया जाना प्रभु के सामने से दूर किया जाना (2 थिस्स, 1:9), अर्थात उसकी संगति से दूर होना है।

दुष्टों को अनन्त आग में अर्थात नरक में फेंक दिया जाएगा। अनन्त का अर्थ है बिना अन्त के, कभी खत्म न होना, सदा तक रहना। अधर्मी लोग नरक में जब तक रहेंगे, जब तक धर्मी लोग स्वर्ग में रहेंगे। यीशु ने कहा कि आग अनन्त है। पहले उसने नरक को कभी न बुझने वाली आग, बताया था, जहां उनका कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती (मरकुस 9:43, 48)।

आयतें 42, 43. दुष्टों को शुद्ध और निर्मल मसीहियत के व्यवहार को नजरअंदाज करने के कारण दण्ड दिया गया (याकूब 1:27)। उन्होंने उनकी सेवा नहीं की जिनकी धर्मियों ने की थी, जो भूखे, प्यासे, परदेशी, नंगे, बीमार और बंदीगृह में थे (मत्ती 25:35, 36)। ये व्यभिचार, फोर्निकेशन, मतवालेपन, झूठ बोलने और चोरी करने जैसी चूक के बजाय भूल के पाप थे (1 कुरि. 6:9, 10)। याकूब ने लिखा है इसलिए जो कोई भलाई करना चाहता है और नहीं करता, उसके लिए यह पाप है (याकूब 4:17)।

आयत 44. दण्ड पाने वालों ने जब राजा के शब्द सुने तो वे पूछने लगे, हे प्रभु हम ने तुझे कब इन वस्तुओं की आवश्यकता में देखा, और तेरी सेवा न कर पाए? चाहे संक्षेप में ही था पर उनका प्रश्न धर्मियों द्वारा पूछे गए प्रश्न का ही प्रतिबिम्ब था (मत्ती 25:37-39)।

आयत 45. अपने पिछले उत्तर के साथ मेल खाते हुए (25:40) राजा ने उत्तर दिया, मैं तुम से सच कहता हूं, कि तुम ने जो इन छोटे से छोटों में से किसी एक के साथ नहीं किया, वह मेरे साथ भी नहीं किया। प्रभु की देह की उचित आवश्यकताओं को पूरा न कर पाने का अर्थ उसकी सेवा न कर पाना है।

इस दृष्टांत में उनको दिए गए दण्ड का कारण हमारे प्रभु के पास बिल्कुल स्पष्ट है। हमारा उद्धार हमारे भले कार्यों के द्वारा नहीं हुआ है, परन्तु हमारा उद्धार उनके बिना नहीं हो सकता है। वे इस बात का प्रमाण हैं कि हमारा विश्वास सच्चा है (याकू. 2:14-26)।

आयत 46. राजा ने बात खत्म की, यह अनन्त दण्ड भोगेंगे, परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे। नये नियम में यहां अनन्त दण्ड शब्द का केवल एक बार इस्तेमाल हुआ है।

दण्ड पाने वालों के विपरीत धर्मियों को अनन्त जीवन में प्रवेश करवाया जाएगा। अनन्त दण्ड के विपरीत नये नियम में यह शब्द बार-बार, विशेषकर यूहन्ना के लेखों में मिलता है।

परमेश्वर के स्वभाव की खोज

जेम्स ई. प्रीस्ट

आपको याद होगा कि अपनी यात्रा के आरंभ में हमने कहा था कि परमेश्वर के स्वभाव की खोज करना साहसपूर्ण कार्य है। हमें आशा है कि मार्ग में आने वाली कठिन चुनौतियों के बावजूद हम अपनी साहसिक यात्रा में मिलकर आगे बढ़ पाए हैं। हम मानते हैं कि यदि परमेश्वर ने स्वयं अपनी सृष्टि में, अपने पुत्र में, और बाइबल में अपने आपको प्रकट नहीं किया होता तो हम यहां तक नहीं पहुंच सकते थे। जो कुछ परमेश्वर ने अपने बारे में प्रकट नहीं किया अर्थात समय, उसके बारे में हम नहीं जान सकते। इससे हमें दो तथ्यों

का पता चलता है। पहला, बिना उसकी सहायता के उसे जानने में हम पूरी तरह से असहाय है। दूसरा, हम सृष्टि से जानकर आश्वस्त हो सकते हैं कि परमेश्वर है। बाइबल से हम जान सकते हैं कि परमेश्वर कैसा है और वह हमें कैसा देखना चाहता है। मिलकर अध्ययन करने के लिए हम बाइबल का व्यापक उपयोग इसी लिए करते हैं।

मेरा मानना है कि मेरी तरह, आप भी पिता के रूप में परमेश्वर की बहुपक्षीय भूमिका पर आश्चर्यचकित और भयभीत हुए होंगे। अपनी यात्राओं में समय की दिशा को मोड़ते हुए लम्बे संकीर्ण दृश्यों ने परमेश्वर को अनन्त पिता, सृजनात्मक पिता, विश्वव्यापी पिता, चयनात्मक पिता और आत्मिक पिता के रूप में दिखाया है।

अदन की वाटिका में प्राचीन समय के कुहरों में से झांकते हुए पुरुष और स्त्री को उनकी मूल पवित्र अवस्था में जिसमें उनके पिता ने उन्हें बताया था, देखकर हम आनन्द से झूमने लगते हैं। उन्हें परमेश्वर की आज्ञा तोड़कर, दण्ड पाते और परिणामस्वरूप उससे दूर निकाल जाने को देखकर निराशा में डूब जाते हैं। पाप में गिरी मनुष्य जाति को फिर से बहाल करने के लिए परमेश्वर के धैर्य के काम को देखकर हमारी जान में आई थी। अनियंत्रित भ्रष्टाचार के बावजूद परमेश्वर ने नूह और जहाज के द्वारा प्रलय से कुछ धर्मी लोगों को बचा लिया। मूर्तिपूजा और विधर्म के बावजूद, परमेश्वर ने अपनी महान परिकल्पना में इब्राहीम को बुलाया जिसके द्वारा उसने एक नई दिशा में अपने लोगों को ले जाना था (गलतियों 3:6-9)। मूसा में, हमने परमेश्वर को एक व्यवस्था के द्वारा सुरक्षित करते हुए देखा जो उन्हें अन्ततः मसायाह अर्थात तक ले जाने के लिए बनाई गई थी (गलतियों 3:23-25)।

फिर हमने संसार में परमेश्वर के सबसे अलग ढंग से उत्पन्न हुए पुत्र का पता लगाया। जब परमेश्वर के हिसाब से समय पूरा हुआ तो हमने दोपहर के सूर्य से भी अधिक तेज के साथ उसके पुत्र को पृथ्वी पर आते देखा। वास्तव में, उसकी विलक्षणता, प्रताप, व्यक्तित्व, और महिमा इतने कायल करने वाले थे, इतना अधिक ईश्वरीय थे, कि संसार के पापों के लिए जब इस पवित्र और धर्मी पुरुष ने अपने आपको भेंट किया तो सूर्य की चमक भी अंधकार में बदल गई (मरकुस 15:33)। यह दृश्य इतना स्पष्ट, इतना प्रभावित करने वाला, दूसरे सांसारिक तत्वों से इतना अलग था कि रोमी अधिकारी भी जो यीशु के सामने खड़ा उसे मरते हुए देख रहा था, कहने लगा सचमुच यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था (मरकुस 15:39)।

हम एक अविश्वसनीय यात्रा कर रहे थे। अंत में, हमने परमेश्वर को अपने आपको यीशु नासरी के पिता के रूप में चित्रित करते देखा था, परन्तु क्या यह कहानी का अंत है? क्या यीशु संसार में केवल यही दिखाने के लिए आया था कि परमेश्वर उसका आत्मिक पिता है? यह प्रकाशन चौंका देने वाला है। परन्तु कुछ और भी है जो हमें तनाव में डालता और कृतज्ञता और धन्यवाद के साथ हमारे मनों को ऊंचाई पर पहुंचाता है। अब हम जानते हैं कि यीशु के आत्मिक पिता के रूप में, परमेश्वर ने हमारे पापों के लिए बलिदान के रूप में अपने पुत्र को भेंट कर दिया ताकि हम भी, अपने आत्मिक पिता के रूप में परमेश्वर को पा सकें। जब तक समय चलता रहेगा, तब तक इससे बड़ा कोई काम नहीं होगा। आने वाली शताब्दियों में, कोई ऐसा युग नहीं आएगा जिसमें बाइबल जैसी किसी दूसरी पुस्तक में पिता की किसी अन्य भूमिका में परमेश्वर को दिखाया जाएगा। मसीही युग में, हम छुटकारे की उसकी महान योजना के चरम का अनुभव कर रहे हैं। यह एक आश्चर्यचकित करने वाली योजना है। मनुष्यों से मेल मिलाप करने का

परमेश्वर का यह अंतिम ढंग है। परमेश्वर ने मसीह में इसके पूरा होने का संसार की रचना से भी पहले देखा था।

जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उसमें चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र और निर्दोष हों। और अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार हमें अपने लिए पहिले से ठहराया, कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने हमें उस प्यारे में सेंत मेंत दिया (इफिसियों 1:4-6)।

अनुग्रहकारी, प्रेमी पिता का यह कितना महान और अद्‌भुत कार्य है। उसने हमारे लिए उसकी संतान बनने का मार्ग उपलब्ध करवा दिया है। वह हमारा आत्मिक पिता बनना चाहता है। जैसे मनुष्य जाति को बनाने के समय के आरंभ में उसने इसे पवित्र बनाया था, वैसे ही वह हमें फिर से बनाना चाहता है। वह चाहता है कि हम उसके परिवार में शामिल हों। वह चाहता है कि हम घर लौट आएं।

हम उसके अनुग्रहकारी प्रस्ताव को कैसे स्वीकार करते है? हम उसकी अतुलनीय प्रेम भेंट अर्थात मसीह को ग्रहण करते हैं (यूहन्ना 8:24)। उसे परमेश्वर का पुत्र मानकर, हम मन फिराकर उसकी ओर मुड़ते हैं (लूका 13:1-5) और अपने पापों की क्षमा के लिए उस में बपतिस्मा लेते हैं (मत्ती 28:18-20; प्रेरितों 2:38, 39)। इस गाड़े जाने से हम पाप के लिए मरते हैं, और नया जन्म लेकर नया जीवन जीने के लिए जी उठते हैं (यूहन्ना 3:3-5; गलतियों 3:26-29; रोमियों 6:1-12)। इस तरह मसीह में अपने विश्वास का अंगीकार करके, हम जानते हैं कि हमें स्वर्ग में अपने आत्मिक पिता के सामने कर लिया जाएगा (मत्ती 10:32, 33)। मसीह में हम परमेश्वर की नई सृष्टि बन गए हैं।

सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो वे सब नई हो गई। और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिसने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया, और मेल मिलाप की सेवा हमें सौंप दी है। अर्थात परमेश्वर ने मसीह में होकर अपने साथ संसार का मेल मिलाप कर लिया और उसके अपराधों का दोष उन पर नहीं लगाया (2 कुरिन्थियों 5:17-19क)।

सौदा हो चुका है। हमारे पापों के लिए बलिदान के रूप में अपने पुत्र को भेंट करने की परमेश्वर की योजना अद्‌भुत ढंग से पूरी हो चुकी है। जब हम मसीह में संसार को अपने साथ मिलाने की परमेश्वर पेशकश को स्वीकार करते हैं, तो वह अपने पुत्र यीशु के द्वारा हमारा आत्मिक पिता बन जाता है। हमारे अनन्त भाग्य के लिए कितनी बड़ी संभावना है। आत्मिक पिता हमारा शासक है, यीशु हमारा उद्धारकर्त्ता भाई और मित्र तो हम परमेश्वर के काम का भाग बन जाते हैं जो इतना भयभीत करने वाला है कि सारी सृष्टि के समझदार जीव परमेश्वर की अलौकिक बुद्धि से स्तब्ध रह जाते हैं। इफिसियों 3:10-12 कहता है-

ताकि अब कलीसिया के द्वारा परमेश्वर का नाना प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर स्वर्गीय स्थानों में है प्रगट किया जाए। उस सनातन मनसा के अनुसार, जो उसने हमारे प्रभु मसीह यीशु में की थी। जिसमें हम को उन पर विश्वास रखने से हियाव और भरोसे से निकट आने का अधिकार है।

लोग क्या कहेंगे?

सूज़ी फ्रैड्रिक

क्या इससे कोई विशेष फ़रक पड़ता है कि लोग हमारे बारे में क्या कहते हैं? इस जीवन में, मसीहीयों को अपने प्रभाव का हमेशा ध्यान रखना चाहिये। यदि हम ऐसे जीते हैं, जैसे परमेश्वर चाहता है, तब हममें दूसरों के प्रति दया, अच्छाई करने की भावना होगी। यह ऐसी विशेषताएं है जिनका अधिकतर लोग आदर करते हैं। परमेश्वर की आज्ञा अनुसार जीवन बिताकर, हम उसकी महिमा और आदर करते हैं, तथा दूसरों के सामने एक अच्छा उदाहरण रखते हैं। अभी हाल ही में दो मसीही महिलाओं की मृत्यु हुई थी और उन दोनों ने मेरे जीवन पर एक बहुत बड़ा प्रभाव छोड़ा। मैं इनके उदाहरण के विषय में आपको कुछ बताना चाहुंगी।

जब मैं छोटी लड़की थी तथा अपनी आयु में बढ़ रही थी। तब सिस्टर वेल्टा ली हम जवान लड़कियों की बाइबल क्लास लेती थीं। वह हमारे प्रति बहुत अच्छी थीं- तथा पहुनाई करनेवाली थी अर्थात कभी भी जब हम उनके घर जाते थे तो वह हमारा स्वागत बड़ी प्रसन्नता से करती थीं। जब तक हमने गाड़ी चलानी नहीं सीखी थी, वह हमें अपने साथ घुमाने ले जाती थीं। वह हमेशा हमें उत्साहित करती थीं कि हम अपने अच्छे व्यवहार तथा चाल-चलन में अच्छी मसीही स्त्रियां बनें। वेल्टा ली एक बहुत अच्छी माता तथा पत्नी थी और हमारे लिये एक जीता-जागता उदाहरण थी। हमें ऐसा लगता था कि हम अपनी मां के साथ हैं? उनकी अपनी बेटी जॉयस मेरी बहुत अच्छी मित्र थी। वेल्टा ली अब इस संसार से चली गई हैं परन्तु उनका प्रभाव अभी भी उन सबके उपर स्थिर है जो उन्हें जानते थे। हम सब आज भी उनको बहुत याद करते हैं।

सन् 1973 में, मेरे पति रॉयस ने अपनी शिक्षा प्राप्त करके स्नातक की डिग्री प्राप्त की। हम मार्गन मिल टैक्सास में चले गये और वह वहां एक प्रचारक का कार्य करने लगे। वहां एक महिला थी जो आयु में बड़ी थी तथा एक बहुत अच्छी मसीही थीं। उनका नाम था इलिज़ाबेथ डेविस। यह मसीही स्त्री महिलाओं को बाइबल की शिक्षा देती थीं।

बाइबल का उन्हें बहुत अच्छा ज्ञान था। वह हमेशा बाइबल के अच्छे पाठ तैयार करके हमें सिखाती थीं। मैंने उनसे परमेश्वर की इच्छा के विषय में बहुत कुछ सीखा है। वह बड़ी ही दयालु तथा उदारता दिखाने वाली महिला थी तथा बहुत बुद्धिमान भी थी और एक युवा प्रचारक की पत्नी के लिये एक साहस देने वाली स्त्री थी। उनका प्रभाव उनके परिवार में, चर्च में और समाज में एक लम्बे समय तक रहेगा।

अच्छे प्रभाव वाली ऐसी अनेकों स्त्रियां हैं जिनके विषय में बाइबल हमें बताती हैं। क्या आप इनमें से कुछ के पीछे चलने का प्रयास कर रही हैं?

1. मरियम, यीशु की माता- एक कुवांरी लड़की थी, बड़े ही नम्र स्वभाव की तथा विश्वास से भरी हुई थी। जिब्राइल स्वर्गदूत ने उसके विषय में कहा था ''परमेश्वर के अनुग्रह से भरी हुई'' (लूका 1:26-45)। प्रभु यीशु को बचपन से संभालने की जिम्मेवारी उसे दी गई थी। उसने यीशु की बहुत अच्छी परवरिश की थी।

2. दोरकास (तबीता)- यह स्त्री अपने अच्छे कार्यो तथा दान इत्यादि देने के लिये जानी जाती थी। जब उसकी मृत्यु हुई तब चेलों ने प्रेरित पतरस को बुलवा भेजा। जब वह वहां आया तब वहां पर विधवाएं उसकी मृत्यु से दु:खी होकर रो रही थीं, तथा उसके द्वारा बनाये हुए कपड़ों को एक दूसरे को दिखा रही थीं। परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा पतरस ने

उसे जीवित कर दिया था। और यह बात सारे याफा में फैल गई, और बहुतों ने प्रभु पर विश्वास किया। (प्रेरितों 9:42)।

3. प्रिसकिल्ला- अक्विला तथा प्रिसकिल्ला दोनों का व्यवहार पौलूस के प्रति बहुत अच्छा था। अपने घर में हमेशा वे उसका स्वागत करते थे। (प्रेरितों 18:2-3)। वे दोनों सुसमाचार के सिखानेवाले बन गये थे। (प्रेरितों 18:2-6)। कलीसिया उपासना करने के लिये उनके घर में मिलती थी। (1 कुरि. 16:19)।

4. मन्दिर में विधवा- इस स्त्री का नाम नहीं बताया गया है, परन्तु वास्तव में वह एक बहुत अद्भभुत स्त्री थी। एक ऐसी स्त्री जो प्रभु के लिये अपना सब कुछ सौंपने को तैयार थी। उसमें बलिदान की भावना थी। मन्दिर के भण्डार में लोग बहुत बड़ी-बड़ी रकम डाल रहे थे, परन्तु इस विधवा ने दो दमड़ियां, जो एक अधेले के बराबर होती है उस भण्डार में डाली। (इन सिक्कों का दाम बहुत कम था)। परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में उसका यह देना एक बहुत बड़ी बात थी। यीशु ने इन शब्दों में उसकी बढ़ाई की : ''मैं तुम से सच कहता हूं कि मन्दिर के भण्डार में डालने वालों में से इस कंगाल विधवा ने सब से बढ़कर डाला है। क्योंकि सबने अपने धन की बढ़ती में से डाला है परन्तु इसने अपनी घटी में से डाला है, जो कुछ उसका था, अर्थात अपनी सारी जीविका उसने डाल दी (मरकुस 12:41-44)।

5. मारथा की बहिन मरियम- यीशु की मृत्यु का समय निकट आ रहा था तथा बैतनिय्याह के शमौन के घर में यीशु के लिये एक भोज की तैयारी की गई थी, जब वे खा रहे थे, तब एक स्त्री संगमरमर के पात्र में जटामासी का बहुमूल्य शुद्ध इत्र लेकर आई, और पात्र तोड़कर इत्र को उसके सिर पर उण्डेला। यह इत्र काफ़ी बहुमूल्य था इसलिये कुछ लोग आपस में रिसियाकर कहने लगे, इस इत्र को क्यों सत्यानाश किया गया? परन्तु यीशु ने कहा, ''उसे छोड़ दो, उसे क्यों सताते हो? उसने तो मेरे साथ भलाई की है और जो उससे हो सकता था, उसने किया। उसने मेरे गाड़े जाने की तैयारी में पहिले से ही मेरी देह पर इत्र मला है। मैं तुम से सच कहता हूं, कि सारे जगत में जहां कहीं भी सुसमाचार प्रचार किया जाएगा, वहां उसके इस काम की चर्चा भी उसके स्मरण में की जाएगी।'' (मरकुस 14:3-9, देखें यहून्ना 12:1-8) प्रभु ने कहा ''जो उससे हो सकता था, उसने किया।'' परमेश्वर ने हमें कई प्रकार की योग्यताएं दी हैं। हम सबके पास एक जैसी योग्यताएं नहीं है, परन्तु कुछ न कुछ अच्छे कार्य तो हम कर ही सकते हैं।

आईये हम सब अपनी योग्यताओं को खोजें तथा इनको प्रभु की सेवा के लिये इस्तेमाल करें। शायद आप मेहमानों का आदर सत्कार बड़ी अच्छी तरह से करती है, आप शायद अच्छी तरह से सिखा सकती हैं, शायद आप गरीबों के लिये कपड़े सिल सकती है, और बच्चों का अच्छा पालन-पोषण कर सकती है तथा अपने पति की अच्छी तरह से देखभाल करती हैं। शायद आपके अन्दर नम्रता तथा पहुनाई करने की योग्यता है और आपने पूर्ण रूप से अपने आपको प्रभु को सौंप दिया है। आपको शायद खोज करके यह पता चले कि आप अच्छे मसीही लेख लिख सकती हैं और दूसरों का साहस बढ़ा सकती है। चाहे आपके पास कैसी भी योग्यतायें हों मैं आपसे आग्रह करूंगी कि उन्हें परमेश्वर के लिये इस्तेमाल करें, ताकि यीशु, आपके विषय में भी यह कह सके कि, ''इससे जो हो सकता था, इसने किया।'' जब आप यहां से संसार को छोड़कर चली जाएंगी तब आप क्या चाहेगी कि लोग आप को किस रूप में याद करें? सबसे बड़ी बात तो यह है कि लोग आपके विषय में क्या कहेंगे? जिस दिन न्याय का दिन होगा उस दिन प्रभु यीशु आप के विषय में क्या कहेगा?